23

आपके पास प्रश्न हैं? परमेश्वर के पास उज़्र हैं!

(6:9-11)

''प्रथम मसीही नाटक''[1] से परदा चार बार उठ चुका था। चार बार यूहन्ना ने एक भयंकर घुड़दौड़ में सम्पूर्ण पृथ्वी पर पीछे विनाश छोड़ते एक सवार को देखा था।

टापों की मद्धम होती आवाज़ के साथ परदा धीरे-धीरे पांचवीं बार उठने लगता है। हत्याकांड अर्थात चार विनाशकारी सवारों के दृश्य को देखकर यूहन्ना चकित नहीं हुआ। उसे धूल में पड़ी रौंदी हुई लाशों के शांत और गम्भीर दृश्य को देखने की उम्मीद होगी। इसके बजाय, उसके कानों में परेशान स्वरों का शोर सुनाई दिया।

परदा उठने पर यूहन्ना वास्तव में उन चार घुड़सवारों का काम देख रहा था, परन्तु यह दृश्य भौतिक संसार का नहीं था वह तो आत्माओं के संसार में झांक रहा था। पृष्ठभूमि में परमेश्वर की वेदी थी और बीच मंच में बलिदान की बड़ी वेदी थी। वेदी के आस-पास नीचे से आवाज़ें आ रही लगती थीं।

ध्यान लगाकर यूहन्ना ने वेदी के नीचे आस-पास परछाइयां देखीं, जो घुड़सवारों की जंगली सवारियों के कारण सताव से अपने प्राण देने वाले मसीही लोगों की आत्माएं थीं। इन शहीदों के हाथ परमेश्वर की वेदी की ओर बढ़े हुए थे और ऐसा लग रहा था कि उन्हें समझ नहीं आ रहा है कि क्या करें।

यूहन्ना ने इन शब्दों में उस दृश्य का वर्णन किया है:

> और जब उसने पांचवीं मुहर खोली, तो मैंने वेदी के नीचे उनके प्राणों को देखा, जो परमेश्वर के वचन के कारण, और उस गवाही के कारण जो उन्होंने दी थी, वध किए गए थे। और उन्होंने बड़े शब्द से पुकार कर कहा; हे स्वामी हे पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और पृथ्वी के रहने वालों से हमारे लोहू का पलटा कब तक न लेगा? और उनमें से हर एक को श्वेत वस्त्र दिया गया, और उनसे कहा गया, कि और थोड़ी देर तक विश्राम करो, जब तक कि तुम्हारे संगी दास, और भाई, जो तुम्हारी नाईं वध होने वाले हैं, उनकी भी गिनती पूरी न हो ले (6:9-11)। (वेदी के नीचे वाले प्राण का चित्र देख।)

यूहन्ना उनकी परेशानी समझ गया होगा। मूसा ने लिखा था कि परमेश्वर ही ''अपने दासों के लोहू का पलटा लेगा, और अपने द्रोहियों को बदला देगा, ...'' (व्यवस्थाविवरण 32:43)। यीशु इस बात से सहमत था: ''सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा, जो रात-दिन उस की दुहाई देते रहते; ... ?'' (लूका 18:7)। आरम्भिक मसीहियों को यह समझ नहीं आता होगा कि परमेश्वर उन पर सताव बन्द क्यों नहीं करवाता।

यूहन्ना द्वारा ''वेदी के नीचे'' के लोगों के प्रश्न सुनने तक परदा बन्द हो गया। मन में प्रश्न लिए मैं उसके अंधेरे में बैठने की कल्पना कर सकता हूं। परमेश्वर का अन्तिम उत्तर क्या *होगा?*

उत्तर में, परदा फिर उठने लगा। एक बार फिर यूहन्ना के कानों में आवाज़ पड़ी; परन्तु इस बार, आवाज़ों की जगह उसे धमाके, गड़गड़ाहट और विस्फोट सुनाई दिए: जैसे संसार फट रहा हो! यूहन्ना ने जो दृश्य देखा, उसने उसे हिलाकर रख दिया। क्या लिखते हुए उसका हाथ कांपा?

> और जब उसने छठी मुहर खोली, तो मैंने देखा, कि एक बड़ा भुईंडोल हुआ; और सूर्य कम्बल की नाईं काला, और पूरा चन्द्रमा लोहू का सा हो गया। और आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आंधी से हिलकर अंजीर के पेड़ से कच्चे फल झड़ते हैं। और आकाश ऐसा सरक गया, जैसा पत्र लपेटने से सरक जाता है; और हर एक पहाड़, और टापू, अपने-अपने स्थान से टल गया। और पृथ्वी के राजा, और प्रधान और सरदार, और धनवान और सामर्थी लोग, और हर एक दास, और हर एक स्वतन्त्र, पहाड़ों की खोहों में, और चट्टानों में जा छिपे। और पहाड़ों, और चट्टानों से कहने लगे, कि हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमने के प्रकोप से छिपा लो। क्योंकि उनके प्रकोप का भयानक दिन आ पहुंचा है, अब कौन ठहर सकता है? (6:12-17)।

पांचवीं और छठी मुहरों के खोले जाने पर प्रकट हुए इन नाटकीय दृश्यों से बढ़कर और की कल्पना करना कठिन होगा। इन दृश्यों का क्या अर्थ है? क्या इनका एक-दूसरे के साथ कोई सम्बन्ध है?

दूसरे प्रश्न के सम्बन्ध में, मेरा मानना है कि छठी मुहर का दृश्य पांचवीं मुहर के विषय में पूछे गए प्रश्न का परमेश्वर का उत्तर है। इस और अगले पाठ में हमें पहले प्रश्न ''उनका क्या अर्थ है?'' के उत्तर की उम्मीद है। इस पाठ में, हम पांचवीं मुहर पर विचार करेंगे; अगले पाठ में हम छठी मुहर को देखेंगे। पांचवीं मुहर के संदेश को व्यक्तिगत बनाने के लिए मैं इस पाठ का नाम ''आपके पास प्रश्न हैं? परमेश्वर के पास उत्तर हैं''[2] रख रहा हूं।

आपके पास प्रश्न हैं (6:9, 10)

प्रश्न की पृष्ठभूमि

आइए पांचवीं मुहर के खोले जाने के समय प्रकट हुए दृश्य की बातों को देखने से

आरम्भ करते हैं। कई बातें तो स्पष्ट हैं। पहली बात तो यह कि दिखाए गए वे लोग शहीद थे[3] अर्थात वे जो ''परमेश्वर के वचन के कारण, और उस गवाही के कारण, जो उन्होंने दी थी, वध किए गए थे'' (आयत 9ख)। ''वध'' वही शब्द है, जिसका इस्तेमाल यीशु की मृत्यु के सम्बन्ध में किया गया (5:6, 9, 12; 13:8 भी देखें)।[4] उन्हें उसी कारण मारा गया, जिस कारण यूहन्ना को देश निकाला दिया गया था (1:9 और 1:2 भी देखें)। बाद में हम देखेंगे कि उन्होंने सम्राट की ''मूर्ति की पूजा'' करने से इनकार कर दिया था (13:15) जिस कारण उनके ''सिर काटे गए'' थे (20:4)। मौत की धमकी मिलने के बावजूद विश्वासी रहकर (2:10) उन्होंने मसीह के लिए अपने प्राण दे दिए थे।

यीशु ने अपने चेलों को चेतावनी दी थी कि लोग ''क्लेश दिलाने के लिए तुम्हें पकड़वाएंगे, और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे'' (मत्ती 24:9)। स्तिफनुस पर पथराव (प्रेरितों 7:58-60) और याकूब का सिर काटे जाने से लेकर (प्रेरितों 12:1, 2; देखें मरकुस 6:22-29) मसीही शहीदों के लहू से पृथ्वी रंगी थी। तब से, रोमी साम्राज्य ने यीशु के अनुयायियों के ''खुले शिकार''[5] की घोषणा कर दी। प्रकाशितवाक्य के लिखे जाने तक, पौलुस, उसके सहकर्मियों लूका और तीमुथियुस और यूहन्ना के अलावा सभी प्रेरितों, और हज़ारों दूसरे मसीहियों सहित, जिन्हें हम नहीं जानते, की शहादत प्रभु के लिए बहुमूल्य थी।

ध्यान दें कि यूहन्ना ने इन शहीदों की देहों को नहीं, बल्कि उनके ''प्राणों'' को देखा था। ''प्राणों'' शब्द का अनुवाद *psuche* के बहुवचन रूप[6] से किया गया है, जिसका अर्थ ''जीवन'' ही होता है (मत्ती 20:28; प्रकाशितवाक्य 12:11)।[7] यहां यह शब्द सम्भवतया उनकी अविनाशी आत्माओं के लिए इस्तेमाल हुआ है।[8] यहूदी लोग मनुष्य की आत्मा को देह के स्मरण के रूप में रखा मानते थे, जिसमें यह थी (मत्ती 14:26; लूका 24:36, 37)। (यूहन्ना के कई मित्र और सहकर्मी शहीद हो चुके थे, इसलिए मेरे विचार से वेदी के नीचे के लोगों में से कइयों को वह पहचानता होगा।)

एक और स्पष्ट तथ्य यह है कि ये पवित्र लोग अभी भी जीवित थे। मृत्यु से उनका अन्त नहीं हुआ था। उनके शत्रुओं को लगा था कि उन्होंने उन्हें नष्ट कर दिया, जबकि वास्तविकता यह थी कि जल्लाद की तलवार ने उन्हें प्रभु के पास पहुंचा दिया था।[9] इन शहीदों को मालूम था कि वे कहां हैं और उनके साथ क्या हुआ था। उनकी आत्माएं ''सोई'' हुई ही नहीं थीं, जैसा कि कुछ लोग दावा करते हैं।[10]

एक तीसरा स्पष्ट निष्कर्ष यह है कि सताव कुछ समय के लिए चल रहा था, क्योंकि इन शहीदों का मानना था कि काफ़ी समय बीत चुका है। सताव और भी बढ़ रहा था। प्रकाशितवाक्य के पिछले अध्यायों में केवल एक शहीद अन्तिपास (2:13) का ही उल्लेख था; परन्तु इस दर्शन से यह प्रभाव मिलता है कि यह संख्या बहुत बड़ी थी। इसके अलावा, सताव अभी खत्म होने वाला नहीं था। प्रश्न पूछने वालों को बताया गया था कि और भी कई लोग ''तुम्हारी नाईं वध होने वाले हैं'' (6:11)।

दर्शन की अन्य बातों का महत्व स्पष्ट नहीं है। उदाहरण के लिए ''वेदी के नीचे''

वाक्यांश का क्या अर्थ है ?

प्रकाशितवाक्य में पुराने नियम की शताब्दी के साथ वेदी का, विशेषकर वेदी और मन्दिर के सांकेतिक सम्बन्ध का बार-बार उल्लेख हुआ है। प्रकाशितवाक्य में अक्सर केवल वेदी का उल्लेख हुआ है (देखें 8:5; 11:1; 14:18; 16:7) और यह हमें परम पवित्र स्थान में प्रवेश से पहले रखी धूप की सुनहरी वेदी का स्मरण कराता है (8:3; 9:13; देखें निर्गमन 40:26, 27)। परन्तु प्रकाशितवाक्य 6 में शहीदों ने अपना लहू परमेश्वर के सामने *बलिदान* के रूप में बहाया था। लहू के बलिदान सोने की वेदी पर नहीं, बल्कि परम पवित्र स्थान के बाहर होम बलि की पीतल की वेदी पर चढ़ाए जाते थे (निर्गमन 39:39; 40:29)।[11] रॉबर्ट माउंस ने टिप्पणी की है, ''होम बलि की वेदी या धूप की वेदी के साथ इस वेदी को मिलाना शायद अनावश्यक है[12] ... ऐसा कोई कारण नहीं है कि यूहन्ना के दर्शन से दोनों को एक नहीं बनाया जा सकता हो।''[13] इस दर्शन की मुख्य बात बलिदान है, इसलिए यहां मैं वेदी के दृश्य को ''पीतल की वेदी'' के रूप में देखता हूं।[14]

यह जानने के लिए कि इस वेदी पर बलिदान कैसे दिए जाते थे, पुराने नियम में से देखने पर पता चलता है कि याजक बलिदान किए जाने वाले पशु का ''सब लोहू होम बलि की वेदी के पाये पर, जो मिलाप वाले तम्बू के द्वार पर है, उण्डेल'' देता था (लैव्यव्यवस्था 4:18; आयतें 7, 30 भी देखें; निर्गमन 29:12)। जोसेफस के अनुसार, प्रायश्चित के दिन, वेदी के आस-पास टखनों तक लहू भरा होता था। पृथ्वी पर लहू उण्डेला जाना, इस संस्कार का एक महत्वपूर्ण भाग था, क्योंकि परमेश्वर ने कहा था कि ''शरीर का प्राण लोहू में रहता है'' (लैव्यव्यवस्था 17:11क; आयत 14 भी देखें; व्यवस्थाविवरण 12:23)।

तो हम निष्कर्ष निकालते हैं कि शहीदों के ''प्राण वेदी के नीचे'' होने की बात इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनका लहू प्रभु को बलिदान के रूप में बहाया गया था।[15] अपनी आने वाली शहादत की बात करते हुए पौलुस ने ऐसे ही संकेत का इस्तेमाल किया: ''क्योंकि अब मैं अर्घ्य की नाईं उण्डेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है'' (2 तीमुथियुस 4:6)।

प्रश्न की गम्भीरता

यह पृष्ठभूमि जानने के बाद, हमें बलिदान होने वाले उन लोगों द्वारा पूछे गए प्रश्न पर विचार करने के लिए तैयार होना चाहिए। उनका प्रश्न इस दृश्य में एक निर्णायक बिन्दु है: ''और उन्होंने बड़े शब्द से पुकार कर कहा; हे स्वामी, हे पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और पृथ्वी के रहने वालों से हमारे लोहू का पलटा कब तक न लेगा?'' (आयत 10)।

इस प्रश्न में शिकायत की गंध लग सकती है, परन्तु इसमें किसी प्रकार का कोई अपमान नहीं है। ''हे स्वामी'' उस शब्द का अनुवाद है, जिससे हमें ''निष्ठुर शासक'' अर्थात सम्पूर्ण शक्ति वाला हाकिम शब्द मिला है।[16] इस शब्द का इस्तेमाल दास द्वारा अपने जीवन का पूर्ण नियन्त्रण रखने वाले को सम्बोधित करने के लिए किया जाता था। ''पवित्र''

शब्द में माना गया है कि परमेश्वर पाप को सहन नहीं कर सकता, इसलिए वह सताने वालों के घमण्ड को सदा तक नहीं सहेगा। परमेश्वर को ''सत्य'' कहकर इस बात को स्वीकारा गया कि वह अपनी प्रतिज्ञाएं पूरी करता है, जिसमें अपने लोगों का पलटा लेने की प्रतिज्ञा भी है। जहां तक इन विश्वासियों की बात थी, प्रश्न यह नहीं था कि क्या परमेश्वर उनका बदला *सचमुच* लेगा, बल्कि यह था कि *कब*।

परेशान करने वाला प्रश्न। प्रश्न का पहलू जो आधुनिक पाठकों को परेशान करता है, बदला लेने पर ज़ोर देता है। कुछ लोग यह ज़ोर देते हैं कि बदला लेने के विचार का मसीही लेख में कोई स्थान नहीं है।[17] उनका कहना है कि ''भला, मसीह ने हमें अपने सताने वालों की ओर दूसरा गाल फेरना नहीं सिखाया?[18] और क्या यीशु ने अपने शत्रुओं के लिए भी, जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था, प्रार्थना नहीं की थी?''[19]

यह विषय इतना आसान नहीं है, पर मेरे इन विचारों पर ध्यान दें:

(1) यह आयत इस बात की स्वीकृति है कि मसीही लोग अपने जीवनों में आई समस्याओं तथा परेशानियों से कई बार बड़े जटिल प्रश्नों में उलझ जाते हैं। इसमें यह भी संकेत है कि जब तक हमारा विश्वास सर्वशक्तिमान में है, तो ऐसे प्रश्नों में कोई बुराई नहीं।

(2) यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ये आत्माएं बदला लेने का मामला *परमेश्वर* के हाथों दे रही थीं। नया नियम व्यक्तिगत बदला लेने के विरुद्ध शिक्षा देता है, परन्तु इस बात पर ज़ोर देता है कि परमेश्वर एक दिन अधर्मियों को दण्ड देगा। उदाहरण के लिए, रोमियों 12:17-21 में इस विषय पर पौलुस के निर्देशों पर विचार करें। पौलुस ने अपने पाठकों को आदेश दिया:

> बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; ... जहां तक हो सके तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप रखो। हे प्रियो, बदला न लेना, परन्तु परमेश्वर के क्रोध को अवसर दो, ... परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला, यदि प्यासा हो तो उसे पानी पिला; ... बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।

परन्तु बदला लेने के इस व्यवहार के मध्य पौलुस ने ज़ोर दिया कि एक दिन परमेश्वर मसीही लोगों का पलटा लेगा और उनके साथ दुर्व्यवहार करने वालों को दण्ड देगा। आगे पौलुस ने कहा, ''हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु *परमेश्वर के क्रोध* को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है, मैं ही बदला दूंगा'' (रोमियों 12:19)।

मसीही लोगों के लिए यह समझना आवश्यक है कि नया नियम व्यक्तिगत और निजी बदला लेने को गलत ठहराता है। वास्तविक हो या काल्पनिक बदला लेने को कई लोगों द्वारा स्वाभाविक, तर्कसंगत और किसी भी बात में स्वीकार्य बताया गया है।[20] एक पुरानी पुकार है ''बदला लेने से सुकून मिल जाता है!'' आज कुछ लोग इसे इस प्रकार व्यक्त करते हैं, ''मैं पागल नहीं होता हूं; मैं शांत होता हूं।'' असंख्य पुस्तकों और फिल्मों के कथानक बदला लेने के विषय पर भी होते हैं; ''नायक'' द्वारा खलनायक के सिर पर

परेशानियां और समस्याओं का ढेर लगाने पर श्रोता तालियां बजाते हैं। यीशु के अनुयायियों के रूप में हमारे लिए इस प्रवृत्ति से बचने के लिए परीक्षा में पड़ना आवश्यक है। बाइबल आज भी कहती है, ''सावधान! कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे; पर सदा भलाई करने पर तत्पर रहो, आपस में और सब से भी भलाई ही की चेष्टा करो'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:15)। बदला लेना स्पष्टतया अमसीही विचारों और भावनाओं में है। मन में एक ही समय में कड़वाहट और प्रेम दोनों नहीं भरे हो सकते।

दूसरी ओर नया नियम सिखाता है कि बुराई को दण्ड दिया जाना आवश्यक है और हमें आश्वस्त करता है कि वह दिन आ रहा है, जब बुरी *इच्छा* को दण्ड दिया जाएगा। इसलिए हमें पहले कही गई बातों के साथ मेल खाती आयतें मिलती हैं: ''वह अपने दासों के लोहू का पलटा लेगा, और अपने द्रोहियों को बदला देगा'' (व्यवस्थाविवरण 32:43); ''सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा, जो रात-दिन उस की दुहाई देते रहते हैं; ... ?'' (लूका 18:7); ''पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है, मैं ही बदला दूंगा'' (रोमियों 12:19ख)।

कुछ लोगों को प्रकाशितवाक्य 6:10 की भाषा खून की प्यासी लगती है, परन्तु अधिकतर लोगों का विश्वास है कि सदा के लिए पाप को दण्ड न मिलना गलत होगा। यदि आपको लगता है कि शैतान और उसकी दुष्ट सेनाओं को अन्ततः नष्ट हो जाना चाहिए तो अपना सिर हां में हिलाएं।[21] मैं आपको देख तो नहीं सकता, परन्तु मुझे मालूम है कि आप में से अधिकतर लोगों ने अपने सिर हां में हिलाए हैं। सहज बुद्धि से हम यह जानते हैं कि भलाई का प्रतिफल मिलना और बुराई का दण्ड मिलना उचित है और इसका उलट होना गलत है।[22]

परन्तु मैं इस बात पर ज़ोर देता हूं कि ''बदला लेने की परमेश्वर वाली'' भूमिका निर्धारित करना मेरा या आपका काम नहीं है।[23] पौलुस की आज्ञा को मत भूलें, ''हे प्रियो, बदला न लेना'' बल्कि बदला लेने का काम प्रभु के हाथों में दे दो (रोमियों 12:19)।[24] ''वेदी के नीचे'' के पवित्र लोग यही तो कर रहे थे।

(3) कुछ टीकाकारों ने सुझाया है कि ''कब तक?'' पुकारने वालों को व्यक्तिगत निर्दोष ठहरने के बजाय परमेश्वर के काम के लिए निर्दोष ठहरने का ध्यान अधिक था और मैं मानता हूं कि यह सही है। परमेश्वर द्वारा उन्हें बदला देने पर निजी तौर पर कुछ नहीं मिलना था, क्योंकि उनकी अनन्त मीरास पाने की प्रक्रिया पहले से जारी थी। उनका ध्यान *परमेश्वर* की प्रतिष्ठा पर था। यदि परमेश्वर कुछ नहीं करता, तो उनके शत्रुओं को लगना था कि रोमियों द्वारा पूजे जाने वाले देवताओं की तुलना में प्रभु निर्बल और बेकार है।

यह चिंता पवित्र शास्त्र में बार-बार मिलती है। उदाहरण के लिए, भजन संहिता 79 पढ़ें, जहां भजन लिखने वाले ने प्रार्थना की, ''हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर, अपने नाम की महिमा के निमित्त हमारी सहायता कर; और अपने नाम के निमित्त हम को छुड़ाकर हमारे पापों को ढांप दे'' (आयत 9)। ''अपने नाम की महिमा के निमित्त'' और ''अपने नाम के निमित्त'' शब्दों को रेखांकित करें; इनमें इस बात पर ध्यान दिलाया गया है कि लोग प्रभु को

क्या कहेंगे। फिर लेखक ने पूछा, ''अन्यजातियां क्यों कहने पाएं कि उनका परमेश्वर कहां रहा?'' (आयत 10क)। मूर्ति पूजक लोगों का यह प्रश्न विशेषकर ठोकर दिलाने वाला था कि ''यदि वह सच्चा परमेश्वर है तो फिर कुछ *करता* क्यों नहीं?'' इसी कारण, भजन लिखने वाले ने ''तेरे दासों के खून का पलटा'' शब्द जोड़ा (आयत 10ग)। इन शब्दों में ''हे प्रभु हमारे पड़ोसियों [अर्थात, आस-पास के शत्रु देशों] ने जो तेरी निंदा की है, उसका सात गुणा बदला उनको दे'' (आयत 12)। उसने यह नहीं कहा कि ''हमारी निन्दा करने वालों पर दोष लगा'' बल्कि कहा कि ''*हे प्रभु,* जिन्होंने *तेरी* निंदा की है, उन पर वैसे ही दोष लगा।''

सभी तथ्यों पर विचार करने पर, मेरा मानना है कि माइकल विलकोक सही था, जब उसने कहा कि वेदी के नीचे वाले लोगों की स्पष्ट पुकार ''क्षमा के योग्य ही नहीं, बल्कि सही भी'' थी।[25]

एक सदा बहार प्रश्न। आइए अब प्रकाशबिन्दु यूहन्ना के समय के शहीदों के समय से मोड़कर परमेश्वर के आम लोगों की ओर करते हैं। पहली शताब्दी के अन्त के निकट उठाया गया लोगों का प्रश्न यीशु के पीछे चलने की कोशिश करने वालों के लिए उलझाने वाला था।[26] दाऊद ने पूछा था, ''हे परमेश्वर तू कब तक? क्या सदैव मुझे भूला रहेगा? तू कब तक अपना मुखड़ा मुझ से छिपाए रहेगा? मैं कब तक अपने मन ही मन में युक्तियां करता रहूं, और दिन भर अपने हृदय में दुखित रहा करूं, कब तक मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल रहेगा?'' (भजन संहिता 13:1, 2)।

हब्बक्कूक ने भी यही प्रश्न पूछा था, ''हे यहोवा मैं कब तक तेरी दुहाई देता रहूंगा, और तू न सुनेगा? मैं कब तक तेरे सम्मुख उपद्रव, उपद्रव चिल्लाता रहूंगा? क्या तू उद्धार नहीं करेगा?'' (हब्बक्कूक 1:2)। यिर्मयाह ने ''कब तक?'' के साथ ''क्यों?'' प्रश्न से इसमें सुधार किया था: ''दुष्टों की चाल *क्यों* सफल होती है? *क्या कारण है* कि विश्वासघाती बहुत सुख से रहते हैं? ... *कब तक* देश विलाप करता रहेगा और सारे मैदान की घास सूखी रहेगी?'' (यिर्मयाह 12:1ग-4क)।

विश्वासी लोग आरम्भ से ही इस प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने की कोशिश में रहे हैं। परमेश्वर ने दुष्टों को दण्ड देने और धर्मियों को प्रतिफल देने की प्रतिज्ञाएं की हैं, परन्तु हम ऐसा होते कभी नहीं देखते हैं, हम धीरज खो देते हैं। अपने आस पास देखकर, भक्तिपूर्ण लोग आम तौर पर पिसते हैं, जबकि अधर्मी फलते-फूलते लगते हैं।

इस संसार में

मन में, हमारा विश्वास है कि परमेश्वर सब कुछ ठीक कर देगा, परन्तु करेगा *कब* ? सदियों से दूसरे लोगों की तरह, परमेश्वर की समयसारिणी की हमें भी समझ नहीं है।[27] इससे आपके और मेरे मन में कई प्रश्न खड़े होते हैं।

एक व्यक्तिगत प्रश्न। आज भी हमारे सामने कई प्रश्न हैं। बहुत बार हमारे प्रश्न प्रकाशितवाक्य 6:10 में पूछे गए प्रश्न से मिलते-जुलते होते हैं। हम उस संसार में रहते हैं, जहां कीलों से ठोंकी गई हर चीज़ लगता है कि खुलने ही वाली है।[28] अपने सिर हिलाते हुए हम कहते हैं, ''संसार किस ओर जा रहा *है*?'' ''प्रभु कब तक ऐसा होने देगा?'' ''हे प्रभु, इस सब गड़बड़ को तू कब तक ठीक करेगा?''

कई बार हम और भी व्यक्तिगत प्रश्न पूछते हैं: ''हे प्रभु, तू *मेरे* जीवन की गड़बड़ियों को कब सुधारेगा?'' शायद यूहन्ना के समय के मसीहियों की तरह-परिवार के द्वारा, किसी पूर्व मित्र के द्वारा या किसी पड़ोसी के द्वारा आप भी सताए जा रहे हैं। शायद आपको समझ नहीं आ रही कि आपके साथ हो रहे इस दुर्व्यवहार में से कैसे निकला जाए। शायद आप ईमानदारी से अपना काम कर रहे हैं, परन्तु उन्नति पाने वाला व्यक्ति जो अधिकतर समय अपने बॉस की चापलूसी में गुज़ारता है, एक आलसी व्यक्ति है।

शायद, यिर्मयाह भविष्यवक्ता की तरह, आप अपने प्रश्न के साथ ''क्यों'' शब्द जोड़ते हैं: ''हे प्रभु, मुझे ही *क्यों* इतनी परेशानियां हैं?'' ''हे प्रभु, मेरा जीवन साथी [या मेरा बच्चा] *क्यों* मरा?'' ''हे प्रभु, मैंने अपने बच्चों का पालन-पोषण सही ढंग से करने की कोशिश की थी! फिर वे *क्यों* गलत हो गए?'' ''हे प्रभु, मैं अपने बिलों का भुगतान *क्यों* नहीं कर सकता?'' ''हे प्रभु, मुझे कैंसर [या मिर्गी, या दिल की बीमारी] *क्यों* है?'' ''हे प्रभु, मैं इतना अकेला *क्यों* हूं?'' ''हे प्रभु, मुझे नहीं पता कि मैं तब तक स्थिर रह पाऊंगा! तू मेरी सहायता *कब तक* करेगा? *कब तक?*''

एक क्षण के लिए 9 और 10 आयतों के दृश्य को फिर से देखें। आपके मन में कौन से शब्द आते हैं?''बेचैन''?''उलझन में पड़े''?''घबराए हुए''?''परेशान''?''तकलीफ़ में''? परमेश्वर के लोग अत्याचार सह रहे थे, परन्तु उन्हें समझ नहीं आता था कि परमेश्वर कुछ करता क्यों नहीं? आप उनकी उलझन को अपने जीवन में देख सकते हैं।

परमेश्वर के पास उत्तर हैं (6:11)

इस पाठ के शीर्षक में इस विचार की झलक है कि यदि ''आपके मन में प्रश्न हैं,'' तो ''*परमेश्वर* के पास उत्तर हैं।'' अब हम देखेंगे कि वचन की इन आयतों में हमें कौन से उत्तर मिल सकते हैं-पहली सदी के लोगों के लिए और हमारे लिए।

परमेश्वर का उत्तर तब

आयत 11 को पढ़कर हम निराश हो सकते हैं, क्योंकि पहली बार देखने पर लगता है कि परमेश्वर ने पवित्र लोगों की पुकार को नज़रअन्दाज़ कर दिया। लगता है कि ''कब तक?'' का प्रश्न हवा में ही लटका हुआ है, जिसका उत्तर नहीं दिया गया:

> और उनमें से हर एक को श्वेत वस्त्र दिया गया, और उनसे कहा गया है कि और थोड़ी देर तक विश्राम करो,[29] जब तक कि तुम्हारे संगी दास, और भाई, जो तुम्हारी नाईं वध होने वाले हैं, उनकी भी गिनती पूरी न हो ले (आयत 11)।

परन्तु और अध्ययन करने पर हम देखते हैं कि इस आयत में एक उत्तर दिया गया है। इस प्रबन्ध में हमें, कार्य तथा ताड़ना में तीन भागों वाला उत्तर मिलता है। मूल उत्तर है कि ''जो सही है वह करने के लिए तुम्हें *मुझ पर भरोसा* रखना होगा।'' तीन भाग इस प्रकार हैं:

(1) ''*मुझ पर भरोसा रखो: तुम नहीं समझ सकते।*'' इस बात से कि शहीद होने वालों को श्वेत वस्त्र दिए गए और उनसे ''विश्राम'' करने के लिए कहा गया, हमें यही पता चलता है कि परमेश्वर न ही उन्हें और न ही उनके प्रश्न को नज़रअन्दाज़ कर रहा था। तो फिर उन्हें उत्तर क्यों नहीं मिला? शायद इसलिए कि वे समझ नहीं सकते थे। पवित्र शास्त्र में ''कब तक?'' के प्रश्न और जगहों पर देखें। अधिकतर, परमेश्वर ने उत्तर देने की परवाह नहीं की।[30] जहां तक परमेश्वर की सम्पूर्ण योजनाओं तथा उद्देश्यों की बात है, मनुष्य उन्हें समझने के अयोग्य है (यशायाह 55:8, 9)।[31]

जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स ने कहा है कि ''परमेश्वर की चिंता हमारे प्रश्नों से व्यापक है''[32] और यह बात बिना किसी संदेह के सत्य है। शहीदों की चिंता वर्तमान के लिए थी, जबकि प्रभु का ध्यान दूर तक था।

(2) ''*मुझ पर भरोसा रखो: मुझे तुम्हारा ध्यान है।*'' चाहे परमेश्वर ने प्रश्न का कोई सीधा मौखिक उत्तर नहीं दिया, परन्तु इससे ऐसा कोई संकेत नहीं मिला कि उसे ध्यान नहीं है। रोमियों 8 अध्याय में पौलुस के शब्द यहां उपयुक्त हैं:

> कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नङ्गाई, या जोखिम, या तलवार? जैसा लिखा है, कि तेरे लिए हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होनेवाली भेड़ों की नाईं गिने गए हैं। परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी (रोमियों 8:35-39)।

सताव और परीक्षाएं परमेश्वर के प्रेम को कम नहीं करते।

जिन आयतों पर हम विचार कर रहे हैं, उन में परमेश्वर ने पवित्र लोगों को श्वेत वस्त्र देकर अपना प्रेम दिखाया। श्वेत वस्त्रों का उल्लेख प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में बार-बार[33] परमेश्वर की स्वीकृति देने के लिए हुआ है यानी ये *प्रतिज्ञा के वस्त्र* थे। सात कलीसियाओं के नाम पत्रों में, जय पाने वालों को ''श्वेत वस्त्र'' देने की प्रतिज्ञा दी गई थी (3:5)। ये *विजय के वस्त्र* थे। श्वेत विजय का रंग था।[34] पृथ्वी के वासियों के लिए यह कैसा भी क्यों

न लगता हो, परन्तु मसीहियत का कार्य विजयी था; जो लोग अपने विश्वास के लिए मरे थे, वे व्यक्तिगत रूप से विजयी थे। ये *सम्मान के वस्त्र* थे। जॉन बोमैन ने श्वेत वस्त्रों को ''स्वर्गीय सिंहासन वाले कमरे के 'दरबार के वस्त्र' '' कहा। उसने कहा, ''राजा के सामने राज्य की श्रेष्ठता को पोशाक में प्रस्तुत कौन नहीं करेगा?''[35] अगले अध्याय में, जब हम ''बड़ी भीड़, ... सिंहासन के साम्हने और मेमने के साम्हने खड़ी'' (7:9) देखेंगे तो वे ''श्वेत वस्त्र पहने'' हुए मिलेंगे।

इस प्रकार पवित्र लोगों को वस्त्र देकर परमेश्वर उनसे कह रहा था, ''मैं तुम्हें भूला नहीं हूं। मुझे मालूम है कि तुम ने क्या-क्या सहा है और मुझे तुम पर गर्व है। अपने प्रेम और तुम्हें अनन्तकाल तक प्रसन्नता देने की प्रतिज्ञा के प्रमाण के रूप में मैं तुम्हें ये वस्त्र पहनाता हूं!''

(3) *''मुझ पर भरोसा रखो: सब ठीक हो जाएगा।''* परमेश्वर ने पवित्र लोगों के लिए केवल कुछ किया ही नहीं, *बल्कि* उसने कुछ *कहा* भी: ''उनसे कहा गया कि और थोड़ी देर[36] तक विश्राम करो,'' (आयत 11ख)। अनुवादित शब्द ''विश्राम'' का अर्थ ''प्रतीक्षा करना'' हो सकता है और अपने अर्थ के अनुसार इसका संकेत ''धीरज रखना'' है। गुडस्पीड के अनुवाद में कहा गया है कि ''उन्हें थोड़ा और शांत रहने के लिए कहा गया।''[37] बाद में प्रकाशितवाक्य में यह शब्द ''सुख और चैन की स्थिति'' के लिए इस्तेमाल हुआ: '' 'जो मृतक प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं!' आत्मा कहता है, 'हां, क्योंकि वे अपने सारे परिश्रम से विश्राम पाएंगे' '' (14:13)। 6:11 के ''विश्राम'' का अर्थ सम्भवतया 14:13 वाले अर्थ जैसा ही है।

शहीदों को तब तक विश्राम करने के लिए कहा गया ''जब तक कि तुम्हारे संगी दास, और भाई, जो तुम्हारी नाईं वध होने वाले हैं, उनकी भी गिनती पूरी न हो ले'' (आयत 11ग)। इससे यह प्रभाव जा सकता है कि परमेश्वर के हाथ में एक कैलकुलेटर था[38] और मरने वालों की संख्या पूरी होने तक गिनती अभी भी चल रही थी। उन्हें गिनती पूरी होने तक प्रतीक्षा करनी आवश्यक है। लियोन मौरिस ने आयत 11 के अन्तिम भाग पर टिप्पणी की है:

> इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर शहीदों की विशेष संख्या चाहता है और यह कि वह प्रतीक्षा करता है कि किसी न किसी प्रकार यह संख्या पूरी हो जाए। [बल्कि इसका अर्थ यह है कि] वह अपनी योजना पर काम कर रहा है और उस योजना में दूसरे शहीदों के लिए स्थान है। यह योजना न तो जल्दबाज़ी होगी और न ही लेट।[39]

परमेश्वर की और योजनाएं क्या हो सकती हैं, जो और मसीहियों के मरने की अनुमति देने और समय देने को उचित ठहराती हों?[40] 2 पतरस 3 में एक संकेत मिलता है। पतरस के समय में कुछ लोगों को समझ नहीं आता था कि प्रभु वापस क्यों नहीं आया था (2 पतरस 3:3, 4)। यह ज़ोर देने के बाद कि परमेश्वर समय को इस प्रकार नहीं देखता,

जैसे हम देखते हैं (आयत 8), पतरस ने समझाया कि यीशु के वापस आने में देरी क्यों हुई है: ''प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज रखता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले'' (आयत 9)। ''देरी का हर क्षण सुसमाचारीय उपहार है।''[41] एक कारण कि परमेश्वर द्वारा सताने वालों को तुरन्त दण्ड न देने का एक कारण यह था कि वह उन्हें मन फिराने का अवसर देना चाहता था। (यह अजीब लग सकता है, परन्तु बाद के अध्ययनों में पता चलेगा कि यह सही है।)

आइए परेशान पवित्र लोगों को परमेश्वर के उत्तर के तीसरे भाग में वापस चलते हैं: आयत 11 के अन्तिम भाग के विचारों को मिला देने पर हमें प्रभु की ओर से यह ताड़ना मिलती है: ''मैं अपनी योजनाओं पर काम कर रहा हूं। उन योजनाओं के पूरा होने के लिए कुछ और समय लगेगा, पर इस बात में कभी संदेह न करो कि उन पर काम जारी है। उन्हें जल्दी करने में तुम कुछ नहीं कर सकते, सो थोड़ी और प्रतीक्षा करो, धीरज रखो। घबराने के बजाय, अपने बचाए होने की स्थिति की आशिषों का आनन्द लो!'' अन्य शब्दों में, ''मुझ पर भरोसा रखो; सब ठीक हो जाएगा।''

फिर से, बाइबल में उन अवसरों को देखें, जहां लोगों ने परमेश्वर से पूछा कि ''कब तक?'' और आप पाएंगे कि हर बार अन्त में, प्रभु ने ऐसी स्थिति बना *दी,* जिससे सब ठीक हो! अगले दो पाठों में हम अपने लोगों के सताने वालों के सम्बन्ध में सब कुछ सही करने के लिए परमेश्वर की योजनाओं के नाटकीय प्रदर्शनों को देखेंगे।[42] अब्राहम ने सही कहा था, ''क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे?'' (उत्पत्ति 18:25ख)।

परमेश्वर का उत्तर अब

मैं हूं या आप, परेशान होने पर कभी-कभी हमें लगता है कि हमारे साथ ही ऐसा क्यों हुआ है क्योंकि कई बार उस विषय पर बाइबल बताती है; कई बार हम निष्कर्ष नहीं निकाल पाते। परन्तु आमतौर पर हमें अपनी परेशानियों का सही कारण दिखाई नहीं देता। जब हमें समझ नहीं आता, तब भी परमेश्वर का उत्तर यही होता है ''मुझ पर भरोसा रखो सब ठीक हो जाएगा'' और उस उत्तर के भी तीन भाग होते हैं:

(1) *''मुझ पर भरोसा रखो: तुम नहीं समझ सकते।''* आप और मैं पहली सदी के मसीहियों की तरह परमेश्वर की दीर्घकालीन योजनाओं को नहीं समझ सकते। हम ने देखा है कि ''परमेश्वर की चिंताएं [पहली सदी के] प्रश्न पूछने वालों की चिंताओं से बड़ी थीं'' और आज भी यही बात सच है।[43] हमें संसार के अपने छोटे से कोने की चिंता है जबकि परमेश्वर को हर व्यक्ति का ध्यान है। हमें अपनी समस्याओं से निजात की चिंता है, जबकि परमेश्वर का ध्यान हमारे लिए बेहतर करने में है। हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमें प्रसन्न लोग बना दे, जबकि परमेश्वर हमें बेहतर लोग बनाना चाहता है।

परमेश्वर का कहना है, ''मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि ... मेरे और तुम्हारे सोच-विचारों में, आकाश और

पृथ्वी का अन्तर है'' (यशायाह 55:8-9)। यह बात सच है, इसलिए हमें नीतिवचन 3:5 की ताड़ना को मानना आवश्यक है कि ''तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।''

(2) *''मुझ पर भरोसा रखो: मुझे तुम्हारा ध्यान है।''* परमेश्वर ने हमें वही श्वेत वस्त्र देने की प्रतिज्ञा की है, जो उसने शहीद होने वाले पवित्र लोगों को दिए थे (3:5), और वह हम पर भी अपना प्रेम वैसे ही व्यक्त करता है, जैसे उसने उन पर व्यक्त किया था। बच्चे गाते हैं, ''यीशु मुझ से करता प्यार, मैं जानता हूं''; बड़े गाते हैं, ''प्रेम ने मुझ को ऊपर उठाया।'' हम ये गीत इसलिए गाते हैं, क्योंकि इनके शब्द सच्चे हैं! यूहन्ना ने लिखा है, ''प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा'' (1 यूहन्ना 4:10)। परमेश्वर के प्रेम का यह आश्वासन पाकर हम जान सकते हैं कि हमारे जीवनों के साथ कुछ भी क्यों न हो जाए, अन्त में परमेश्वर ने हमारे लिए बेहतर ही रखा है।

(3) *''मुझ पर भरोसा रखो: सब ठीक हो जाएगा।''* हम में से अधिकतर लोग जानना चाहते हैं कि जो कुछ होता है, वह ऐसा *क्यों* है, परमेश्वर की सम्पूर्ण योजना *क्या* है और वह इसे *कब* लागू करने वाला है। मूलत: हमारे लिए भी वही संदेश है, जो सदियों पहले प्रश्न पूछने वाले पवित्र लोगों को दिया गया था: ''शांति रखो। धीरज धरो। मैं अपनी योजनाओं पर काम कर रहा हूं, तुम प्रतीक्षा करना सीखो। इस दौरान, उन आशिषों का आनन्द लो, जो मैंने तुम्हें दी हैं।'' हो सकता है कि परमेश्वर का उत्तर बिल्कुल वैसा न हो जैसा हम चाहते हैं, परन्तु यह वही उत्तर है, जिसकी हमें आवश्यकता है।

ऐसे ही एक गीत के बोल हैं:

> पवित्र लोग अपनी घड़ी देख रहे हैं,
> वे पुकारते हैं, ''कब तक, कब तक?''
> और शीघ्र ही रोने की राह
> सुबह का गीत बन जाएगी।[44]

''कब तक?'' प्रश्न पर और इस आश्वासन पर भी ध्यान दें कि एक दिन सब कुछ ठीक हो जाएगा। मैं फिर कहता हूं कि जब हमारे रास्ते में मुश्किलें आएं, तो हमारे लिए अपना भरोसा प्रभु में रखना सीखना आवश्यक है!

> '' ... अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास रखो, तब तुम स्थिर रहोगे; ... ''
> (2 इतिहास 20:20)।

> ''अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, ... ''
> (भजन संहिता 37:5)।

> ''यहोवा पर सदा भरोसा रख, क्योंकि प्रभु यहोवा सनातन चट्टान है'' (यशायाह 26:4)।

धन्य है, वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिस ने परमेश्वर को अपना आधार माना हो (यिर्मयाह 17:7)।

सारांश

''आप प्रश्न पूछना चाहते हैं? परमेश्वर उत्तर देने को तैयार है!'' परमेश्वर कुछ प्रश्नों का उत्तर तुरन्त दे देता है! अन्यों को वह टाल देता है। कुछ प्रश्नों का उत्तर कभी नहीं मिल सकता, क्योंकि उनका उत्तर देने की आवश्यकता ही नहीं है। परमेश्वर का उत्तर जो भी हो, वह सही है और हमें उस पर भरोसा रखना चाहिए।

एक प्रश्न, जिसका उत्तर परमेश्वर ने पहले से ही अपने वचन में दे दिया है। यह प्रश्न 1 पतरस 4:17ख में मिलता है, ''उनका क्या अन्त होगा, जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते?'' इसका उत्तर 2 थिस्सलुनीकियों 1:7ख, 8 में है, ''प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रकट होगा। और जो ... हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा।''

जब तक आप नया जन्म लेकर[45] सुसमाचार को नहीं मानते,[46] आपको परमेश्वर की संतान की प्राथमिकता वाला व्यवहार नहीं मिल सकता। यदि आपने सुसमाचार को नहीं माना है, तो आज ही मान लें!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

पवित्र शास्त्र के इस भाग के लिए कई बार ''शहीदों की पुकार'' शीर्षक का इस्तेमाल किया जाता है।

अगले पृष्ठ पर वेदी के नीचे के पवित्र लोगों की तस्वीर एक मिश्रित दृश्य है। चित्र के बाईं ओर वाले पवित्र लोग पुकार रहे हैं, ''कब तक?'' दाईं ओर एक स्वर्गदूत पवित्र लोगों को वस्त्र दे रहा है (और यह इस बात का संकेत है कि पवित्र लोगों को प्रतीक्षा करने के लिए कहा जा रहा है)। उदाहरणों में स्वर्गदूत यहां पहली बार दिखाई दिया है, सो यह ध्यान दिलाना अच्छा है कि ब्रायन वाट्स ने स्वर्गदूत का चित्र पंखों वाला नहीं बनाया। बाइबल में करूब और साराप को पंखों के साथ सांकेतिक अर्थ में दिखाया गया था, परन्तु लोगों को दिखाई देने वाले स्वर्गदूतों के विवरण के भाग के रूप में पंखों का उल्लेख कहीं नहीं हुआ (उदाहरण के लिए देखें, लूका 24:4; प्रेरितों 1:10)। इस शृंखला में स्वर्गदूतों को बिना पंखों के दिखाया जाएगा।

टिप्पणियां

[1]यह शीर्षक प्रकाशितवाक्य पर जॉन विक बोमैन की पुस्तक *द फ़र्स्ट क्रिश्चियन ड्रामा: द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1955) से लिया गया है। [2]''आपके पास प्रश्न हैं? परमेश्वर के

पास उत्तर हैं'' का इस्तेमाल वहां किया जाता है, जहां मैं रहता हूं। [3]आयत 9 में ''गवाही'' शब्द *martus* के एक क्रिया रूप का अनुवाद है, जिससे अंग्रेज़ी का शब्द ''martyr'' निकला है। [4]यही शब्द लाल घोड़ों पर सवार के सम्बन्ध में इस्तेमाल किया जाता है (6:4)। [5]अमेरिका के हर राज्य में पशुओं और पक्षियों के शिकार सम्बन्धी नियम हैं। किसी पशु विशेष पर ''खुले शिकार'' के दौरान उसका शिकार करने की छूट होती है, यानी जब ''शिकार खुला'' नहीं होता तो उस पशु का शिकार करना अवैध होता है। [6]यह वही शब्द है जिससे अंग्रेज़ी शब्द ''psyche,'' ''psychology'' और इससे सम्बन्धित शब्द निकले हैं। [7]Psuche या ''प्राण'' केवल व्यक्ति के लिए भी हो सकता है (1 पतरस 3:20; KJV की तुलना करें)। [8]कई बार *psuche* का इस्तेमाल मनुष्य के अविनाशी आत्मा के लिए किया जाता है (उदाहरण के लिए देखें मत्ती 20:28)। संदर्भ से तय होता है कि *psuche* का अर्थ क्या है। [9]यूहन्ना ने जान-बूझकर संक्षेप में यह स्पष्ट नहीं किया, ये प्राण *कहां* थे। बाद में मनुष्य की एक परम्परा बन गई कि मसीही शहीद न्याय का सामना किए बिना सीधे स्वर्ग में जाते हैं, और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कई बार यही साबित करने की कोशिश करती है। इन प्राणों के न्याय की प्रतीक्षा करते हुए *स्थान* को बताना यूहन्ना का उद्देश्य नहीं था। अधोलोक के संसार की सबसे विस्तृत व्याख्या, जहां भले और बुरे लोगों की आत्माएं न्याय की प्रतीक्षा कर रही हैं, लूका 16 में मिलती है। [10]यहोवा'स विटनेस और अन्य भौतिकवादी गुट इस बात से इनकार करते हैं कि मनुष्य की आत्मा अविनाशी है। उनका दावा है कि देह की मृत्यु के साथ ही व्यक्ति का अस्तित्व परमेश्वर के स्मरण को छोड़, और कहीं नहीं होता। उनकी वचन से बाहर की इस बात के अनुसार, पुनरुत्थान असल में पुन: निर्माण है। इस और ऐसी और शिक्षाओं को कई बार ''आत्मा का सोना'' की शिक्षा कहा जाता है।

[11]इस पुस्तक में पहले दिया गया तम्बू का रेखाचित्र देखें। [12]यद्यपि टीकाकारों के विचार इस बात पर अलग-अलग हैं कि यहां किस वेदी की बात है, परन्तु अधिक इससे सहमत हैं कि प्रकाशितवाक्य में केवल यही वेदी की बात है [13]रॉबर्ट माउंस, द *बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 157. [14]कुछ लोग बहस करते हैं कि हो न हो यह बलिदान की वेदी ही है क्योंकि यीशु ने ''सर्वदा के लिए'' एक ही बार बलिदान दे दिया (इब्रानियों 10:10, 12), परन्तु मसीही लोगों द्वारा भी प्रभु का आत्मिक भेंटें/बलिदान देने की बात कही गई है (इब्रानियों 13:15; रोमियों 12:1 भी देखें)। [15]संकेत हमें उत्पत्ति 4:10 का स्मरण दिलाने के लिए दिया हो सकता है। [16]कई अनुवादों में ''सर्वश्रेष्ठ प्रभु'' है। ''स्वामी'' भी अच्छा अनुवाद होगा। [17]कुछ लोगों ने इसी कारण प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को नये नियम की पुस्तक का भाग होने से नकार दिया है। कुछ बदला लेने पर दिए जाने वाले बल का इस्तेमाल पुस्तक की विश्वसनीयता को चुनौती देने के लिए करते हैं। अन्य जो प्रकाशितवाक्य की परमेश्वर की प्रेरणा से होने पर विश्वास रखते हैं, उनका निष्कर्ष यह है कि ''वेदी के नीचे'' वाले लोग मसीही नहीं हो सकते, इसलिए वे यहूदी ही हैं। परन्तु ये बिना किसी संदेश के मसीही थे: (1) वे उसी कारण वध किए गए थे, जिस कारण यूहन्ना निर्वासित हुआ था (1:9; 6:9)। (2) उन्हें मसीही लोगों से की गई प्रतिज्ञा वाला प्रतिफल ही मिला (3:5)। (3) प्रकाशितवाक्य मसीही लोगों को शांति देने के लिए लिखी गई थी (न कि यहूदियों को), जिन्हें अपने सताव का कारण समझ नहीं आ रहा था। [18]मत्ती 5:39. [19]लूका 23:34. स्तिफनुस ने अपने ऊपर पथराव करने वालों के लिए यही प्रार्थना की थी (प्रेरितों 7:60)। [20]कुछ लोगों का विचार है कि इस प्रवृत्ति का एक कारण आरोपियों को दण्ड देने की न्यायिक प्रणाली की बार बार असफलता है। जो भी कारण हो, मसीही लोगों को चाहिए कि व्यक्तिगत रूप से बदला लेने या दूसरों को ऐसा ही करने के लिए प्रोत्साहित करने की प्रवृत्ति का विरोध करें।

[21]यदि आप इसका इस्तेमाल बाइबल क्लास के पाठ या सरमन के रूप में करते हैं, तो आपको चाहिए कि किसी प्रकार अपने सुनने वालों से उत्तर मांगें। [22]जुड्सोनिया में बुधवार रात्रि अध्ययन करने वाले मेरे एक छात्र ने यह ध्यान दिलाया था कि छोटे बच्चों में भी न्याय करने की समझ होती है। [23]लोगों द्वारा यह मान लेने के कारण कि परमेश्वर ने उन्हें गलत लोगों को बदला देने का काम दिया है, कई बुराइयां उत्पन्न हुई हैं। *स्थानीय सरकार* को ''परमेश्वर का सेवक'' कहा गया है, जो ''बुरे काम करने वाले को दण्ड'' देता है (रोमियों 13:4ग), परन्तु बदला लेना कभी भी रंजिश के लिए नहीं होना चाहिए। [24]पौलुस के अपनी ही सलाह

लेने के एक उदाहरण के लिए, देखें 2 तीमुथियुस 4:14. [25]माइकल विलकोक, *आई सा हैवन ओपन्ड: द मैसेज ऑफ़ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 73. [26]दिए गए उदाहरणों के अलावा, देखें भजन संहिता 6:3; 35:17; 74:9–11; 79:5; 80:4; 89:46; 90:13; यशायाह 6:11; यिर्मयाह 47:6; जकर्याह 1:12. [27]2 पतरस 3 के साथ कई समानताएं बनाई जा सकती हैं, जहां ऐसे लोगों का उल्लेख है, जिन्हें परमेश्वर की समय सारणी से दिक्कतें थीं। इन आयतों का उल्लेख बाद में इस पाठ में किया गया है। [28]आपको चाहिए कि ''संसार पागल हो गया'' के कुछ वर्तमान उदाहरण दें। [29]उन्हें वस्त्र किसने दिए? उन्हें ''विश्राम'' करने के लिए किसने कहा? सम्भवतया स्वर्गदूतों ने उन्हें वस्त्र दिए (इब्रानियों 1:13, 14)। ये ताड़ना, हो सकता है कि वेदी से ही आई हो (देखें 9:13)। महत्व इस बात का है कि उस कार्य और बातों के पीछे *परमेश्वर* था। [30]एक सम्भावित अपवाद यशायाह 6:11 है।

[31]इस तथ्य से एक समानता बनाई जा सकती है कि परमेश्वर ने *अय्यूब* की शिकायतों का उत्तर सीधे नहीं दिया, बल्कि न समझ पाने के कारण अय्यूब की अयोग्यता को सिद्ध करने के लिए अय्यूब से एक से एक प्रश्न पूछे। [32]जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *द रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 67. [33]6:11 में ''वस्त्र'' के लिए यूनानी शब्द *stole* (स्टोले) है। यह ''लम्बा चोगा'' होता था (होमेर हेली, *रैवलेशन: ऐन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिंगन: बेकर बुक हाउस, 1979], 196)। प्रकाशितवाक्य में यह पहली बार है कि इस विशेष शब्द का इस्तेमाल हुआ हो (दोबारा इसका इस्तेमाल 7:9, 13; 22:14 में होगा), परन्तु यह वैसे ही कपड़ों की बात है जिनका उल्लेख 1:13 में हुआ है: ''पांवों तक का वस्त्र [चोगा]।'' ''वस्त्र'' या ''चोगा'' के लिए अधिक सामान्य शब्द 3:4, 5, 18; 4:4; 16:15; 19:13, 16 में मिलता है; परन्तु प्रकाशिवाक्य में दोनों शब्दों के अर्थ में कोई बड़ा अन्तर नहीं है। [34]इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''गरजती टापें'' में 6:2 पर नोट्स देखें। विजयी लोगों के श्वेत वस्त्र पहनने के उदाहरणों के लिए, देखें 7:9 और 19:14. [35]बोमैन, 51. उस ज़माने में मौके के हिसाब से वस्त्र पहनने की आवश्यकता मत्ती 22:11–13 में देखी जा सकती है। [36]''थोड़ी देर'' वाक्यांश जान बूझकर अस्पष्ट है। (यह किसकी तुलना में ''थोड़ी देर'' होनी थी?) यहां वचन में इस वाक्यांश का उद्देश्य मसीही लोगों को यह आश्वस्त करना था कि सताव हमेशा के लिए नहीं होता। अर्थात यह खत्म हो जाएगा। [37]*द न्यू टैस्टामेंट: एन अमेरिकन ट्रांसलेशन,* सं. एडगर जे. गुड स्पीड (शिकागो: द यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1923), 460. [38]गिनती करने में सहायक कोई भी उपकरण का नाम लें जो आपके यहां इस्तेमाल किया जाता हो। जब मैं यूक्रेन में था, तो कुछ व्यापारी अबेकस का इस्तेमाल करते थे। [39]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 107. [40]आपको चाहिए कि यह ध्यान दिलाएं कि परमेश्वर धर्मियों की मृत्यु को वैसे नहीं देखता, जैसे हम देखते हैं (भजन संहिता 116:15)।

[41]टौमी साउथ, ''द फोर मैसेजस ऑफ़ द सैवन सील्ज़,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (नवम्बर 1988 का अंग्रेज़ी अंक): 10. [42]आपको 19:2 बताना चाहिए: ''उसने अपने दासों के लहू का बदला ले लिया है।'' [43]एक विचार है, जिसका इस्तेमाल किया जा सकता है: ''आपको और मुझे'' सुरंग का दर्शन मिला है। ''सुरंग का दर्शन'' का एक उदाहरण जोड़ लें जिसे आपके सुनने वाले समझ सकते हैं: अंधा करने वालों के साथ एक घोड़ा, सुरंग का दर्शन देने वाला ग्लूकोमा (आंख का एक रोग) वाला एक आदमी, या किसी ऐसे व्यक्ति का उदाहरण, जो देख न सकता हो कि उसके आस पास क्या हो रहा है। [44]एस. जे. स्टोन, ''द चर्च'स वन फाउंडेशन,'' *सौंग्स ऑफ़ द चर्च,* सं. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1977)। यदि यह गीत आपके गाने की पुस्तक में हो, तो आप इसका इस्तेमाल आराधना में करें। ''क्राइस्ट रिटर्नथ'' जैसे अन्य गीतों में भी ''कब तक?'' शब्द मिलते हैं। [45]रोमियों 6:3, 4, 17, 18 में समझाया गया है कि हम सुसमाचार (यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने का शुभ समाचार) में ''आज्ञापालन'' कैसे करते हैं: हम अपने विश्वास और मन फिराने के द्वारा पाप से मरते हैं; हम बपतिस्मे में गाड़े (डुबाये) जाते हैं और जीवन के नयेपन में चलने के लिए जी उठते हैं। [46]यूहन्ना 3:3, 5; 1 पतरस 1:22, 23

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. पांचवीं मुहर को खोले जाने पर यूहन्ना ने क्या देखा?
2. 6:9, 10 के दृश्य से आप पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन करने के लिए आप कौन से शब्दों का इस्तेमाल करेंगे? क्या आपने कभी वेदी के नीचे के उन पवित्र लोगों की तरह सोचने की कोशिश की है?
3. वेदी के नीचे के वे लोग कौन थे? उन्हें क्या हुआ था?
4. ''वेदी के नीचे'' का क्या महत्व है?
5. क्या शहीदों की बदला लेने की पुकार आपको व्याकुल करती है? क्या आपको लगता है कि मसीही दस्तावेज़ में ऐसे व्यवहार के लिए कोई स्थान है?
6. क्या ''जैसे को तैसा'' देने की इच्छा *स्वाभाविक* है? क्या यह *सही* है?
7. व्यक्तिगत बदला लेने और ईश्वरीय न्याय में अन्तर पर चर्चा करें।
8. क्या आप कभी चकित हुए हैं कि परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देने में इतना समय क्यों लगा रहा है? ऐसे प्रश्न गलत कब होते हैं?
9. पाठ के अनुसार, 6:11 में दिए गए उत्तर का संकेत क्या है? इस उत्तर के तीन भागों पर चर्चा करें।
10. वेदी के नीचे वाले उन लोगों को श्वेत वस्त्र देने का क्या महत्व है?
11. 6:11 में ''विश्राम'' शब्द का क्या अर्थ है?
12. क्या मैं और आप हमेशा परमेश्वर की योजनाओं को समझ लेते हैं? जब नहीं समझ पाते, तो हमें क्या करना चाहिए?

वेदी के नीचे वाले प्राण (6:9)